LP
1:2



सार

सरल रामायण

आठो काण्ड



ले०-छेदीलाल पाण्डेय (भण्डा फोड़)

मूल्य =)॥

॥ श्री सरस्वतीजी सदा सहाय ॥

श्रीगणेशायनमः रामायनमः [illegible] श्रीशंकरायनमः

अथ सरल रामायण आरम्भ

आज दुनिया है प्यासी तेरे नाम की।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
पूछा शंकर से माता सती पार्वती।
कैसे रघुकुल में पैदा हुए श्रीपती ॥
सीता कैसे हरी जब थे नरपती।
बोले बाबा कथा हंसके आरम्भकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राज्य रावण का जग में खूंख्वार था।
इन्द्र दिग अग्नि जल यम पे अधिकार था॥
दण्ड में रक्त ऋषियों का अनिवार्य था।
धर्म पर रोक थी धूम थी पाप की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
घोर निश्चर उपद्रव मचाये हुये।
मांस विप्रों का भूमें चबाये हुये ॥
यज्ञ विध्वंस ऋषि-मुनि सताये हुये।
घोर पातक से [illegible]

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

धेनु का भेष धर घूमी त्रैलोक में।
देवता साथ आये मेरी खोज में॥
तब मैंने कहा विष्णु की गोद में।
साथ सबने खड़े आर्त आवाज दी॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

शीघ्र आकाशवाणी हुई जाइये।
पुत्र दशरथ के होंगे न घबराइये॥
दुःख वेही हरेंगे न अकुलाइये।
हो मगन सब चले राह निज धामकी॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

यज्ञ दशरथ अवध पुत्र के हित रचा।
हव्य केकई कोशल सुमित्रा ने खा॥
चैत्र शुक्ला की नौमी को उत्सव मचा।
जन्मे लक्ष्मण भरत शत्रुहन रामजी॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

आदि बासिष्ट जी ने पढ़ाया इन्हें।
अल्प आयु में सब कुछ बताया इन्हें॥

मुग्ध हो जाता जो देख पाया इन्हें।
राम लक्ष्मण का कौशिकने आमाँग की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
भूप बोले बुढ़ौती के अरमान है।
पुत्र प्यारे हैं सब राम तो जान हैं॥
दैत्य खूनी हैं बच्चे तो नादान हैं।
राजगुरुजी ने शंका समाधान की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
भूप थे तो दुखी पर रवाना किया।
ताड़का बाहु पर शर निशाना किया॥
पार सागर के मारीच को ढादिया।
पैर पड़ते शिला पर अहिल्या तरी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
जाय पहुँचे जनकपुर में तीनों जने।
बाग में राम सीता के लोचन सने॥
फिर धनुष यज्ञ में पैज नृप की सुने।
शेष का क्रोध जैसे कि पावक में घी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥

भूप लाखों धनुष को उठाते रहे।
था हिला ना हुला सर खपाते रहे॥
आखिर राम सीता पै भाते रहे।
तोड़ डाला धनुष छन में एक बारगी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
डाल जयमाल सीता गले राम के।
छूट सुरपुर से बाजा अनक धाम के॥
दुष्ट राजा कहैं छीन लो बांध के।
बात होती थी आये परशुराम जी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
देख धनुआं बोले जनकराज से।
कौन दोषी है बाहर निकालो उसे॥
दास है आपका कह उठे रघुपते।
लक्ष्मन दुश्मनी पर कमर बांधली॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
लक्ष्मण ने कहा था पुराना धनुष।
हाथ देते ही टूटा न कीजै अनुष॥
तोड़ डाला बदला न बदला था रुख।

जीर्ण शारंगपर ममता घनी आपकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
नेत्र होगये अरुण औ सम्हाले परुष ।
मूढ़ गुरु के बराबर सभी हैं धनुष ॥
शत्रु गुरु का सो मेरो न मेरा पुरुष ।
देख फरसा कथा सुन सहसबाहु की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
आप के पास नौगुण हैं बोले रमन ।
पास में है हमारे धनुष एक धन ॥
भस्म त्रैलोक्य हो जाय ब्राह्मण बचन ।
क्या जरूरत है फरसा धनुष बानकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
तान फरसा रिसाने लखन लाल से ।
बार इकीस क्षत्री दले दाल से ॥
आज गुरु ऋण चुकाऊँ रहू लाल से ।
राम बोले कुपित हो न भृगुनाथ जी ।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
हंसपड़े शेष बोले कि जननीका ऋण ।

चुक गया अब गुरूसे भी होलो उऋण ॥
हम डरैं ना लरैं काल से प्राण प्रण ।
क्या खबरहै न रघु अजके सन्तानकी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
शोर उठा कि फरसा लिये चल पड़े ।
राम बाणी सुधामय सुनत ढल पड़े ॥
तेज लखि ध्य:न धरले धनुष बल बढ़े ।
हाथ देते धनुष चढ़ गया आप ही ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
प्रार्थना कर मुनी वन गये तप करन ।
छेदीलाल भये नारि नर सब मगन ॥
आज आनंद उमग्यो जनक के सदन ।
हाल सुन भूप दशरथ लुटाये मणी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राजगुरु से ले सम्मति सजाई बरात ।
नाग नर देव गन्धर्व किन्नर यजात ॥
शोध के लग्न ब्रह्मा बस्यो चारो भ्रात।
याचकों को न इच्छा रही दान की ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

राम के व्याह की है अपूरण कथा ।
क्या लुटा क्या मिला क्याकहे शारदा ॥
लौट बारात आई कुशल मय विदा ।
लेखनी क्या लिखेछवि अवध धामकी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

मातु कौशिल्या केकई सुमित्रा मुदित ।
जानकी सी पतौहू पा आनन्द चित्त ।
शत्रुहन औ भरत पहुँचे ननिहाल इत ।
धूम त्रैलोक्य में राम के नाम की ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

अयोध्या काण्ड

राजगुरु को बुला नृप बिचारी लगन ।
राम की राज गद्दीका ठहरा सुदिन ॥
धूम सुरपतिसे ज्यादा नृपति के सदन।
मंथरामंत्र कैकई की मति फिरी ॥

रामजी रामजी रामजी रामजी ॥

शोक गृह में गई फाड़ डाले बसन।
फेंक भूषण लटें खोल पीसें दशन॥
हाल सुन भूप पहुँचे सशंकित सदन।
देखते रंग शंका भई प्राण की॥
रामजी रामजी रामजी रामजी॥

भूप बोले प्रिये क्यों रिसानी हो तुम।
रंग में भंग क्या क्यों सुखानी हो तुम।
मांगलो जो चहो खुद सयानी हो तुम।
याद है नारि बोली दो बरदान की॥
रामजी रामजी रामजी रामजी॥

चार लेलो है दो की तो हस्ती ही क्या।
भूल हो गई बुढ़ापे में हो मत खफा।
कौल रघुवंशियों का अटल सर्वदा।
बात रह जाय परवा नहीं जानकी॥
रामजी रामजी रामजी रामजी॥

राम की है कसम माँगले तू प्रिया।
बैठि बोली कि अब मांगती हूं पिया॥
राज गद्दी भरत को मिले शर्तिया।

राम चौदह बरस बन फिरैं तापसी ॥
रामजी रामजी रामजी रामजी ॥
थाम सर भूप बैठे बिकल हो गये ।
देह निर्जीव सों मूंद लोचन लिये ॥
हाय ऊजड़ अवध अब भई बिन जिये ।
नैन देखा तो नागिन सी फुंकार की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
बोलिये बोलिये सब क्यों होगये ।
मोल आई हूं मैं या भरत ना हुये ॥
मांग लूंगी चबैना सु हां कहि दिये ।
याद आतीहै शिव बलि व दाधीचकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
भूप बोले भरत. राम दो नैन हैं ।
राज देदूं भरत को मुझे चैन है ॥
भेज दूं चर सबेरे अभी रैन है ।
जिद छोड़ो प्रिये राम बनबास की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ।
नारि बोली कहो आप बरदान लो ।

मांगती हूं तो अब बात पर ध्यान दो ॥
गाल फूलैं औ हंसना ये होता न दो।
हां करो या नहीं छोड़ दो धांधली ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
भूप होके बिकल नारि का धर वसन।
हाथ जोड़े न ले प्राण हैं राम धन ॥
शीश लेले न इन्कार चत्री वचन।
प्राण प्यारी न गाहक वनो जान की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
साफ कहताहूं बिन राम जीवन कठिन।
मान जा उम्र भरको कलंकित न बन ॥
प्राण लेलो प्रिये राम भेजो न बन।
पीछे रोयेगी पछतायेगी बामरी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
भूप व्याकुल कराहैं और बेहोश थे।
देखते थे सही लेकिन खामोश थे ॥
छट पटाते कहैं राम निर्दोष थे।
होनहारी मिटे कैसे जब आप थी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

एक भी न चली बीत रजनी गई।
भोर आये सुमन्त्र सुनी विधि भई॥
राम आये कथा कह गई केकई।
भूप ने आंख खोली कहा राम जी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
राम बोले बिहंसि मां बड़ी बात क्या।
राज्य पावें भरत तो है संताप क्या॥
स्वर्ग है तुच्छ जो हुक्म मां बाप का।
है खुशी केवल चिंता अवध नाथ की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
मातु कौशल सुमित्रा धुनैं माथ को।
नारि नर देख रोवैं जगत नाथ को॥
जानकी त्यार हो गई चलन साथको।
लक्ष्मण ने बिदा मातु से मांगली॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
भेष तापस बनाये शुभग राम जी।
पास आये पिता ने उभर सांस ली॥

गोद में ले लिपट राम हा राम जी।
जाव बेटा है अब तो मिलन आखिरी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
शोर चारों तरफ सब विकल नारिनर।
हाय ऊजड़ अवध धुनि रहे लोग सर ॥
केकई की ही निन्दा करे दर बदर।
राम का रथ चला जय पिता मातु की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
ले सचिव राम सिये शेष शृंगबेर पुर।
नारि नर थे विकल थे सुखी देवपुर ॥
लौट आये सुमन्त वचन सुन मधुर।
सीय लक्ष्मण सहित आये तट जाह्नवी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
नाव मांगी तो केवट कहे मृदु वचन।
मेरे परिवार में नाव ही मुख्य धन ॥
होशिला तो हो सबका क्षुधा से मरन।
पांव धोकर उतारूँ न इनकार जी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

काष्ट के पात्र में पग . धुलाने लगे।
व्योम में देव दुन्दुभी बजाने लगे॥
धन्य केवट सभी मन सिहाने लगे।
पार उतरे उतारा उन्हें पार थी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
हो विदा ग्राम से पार यमुना उतर॥
फिर सुनी बाल्मीकि की बातें मधुर॥
चित्रकूट शुभम देख ठहरे रघुवर।
देवता भेष धर सुख कुटी छाय दी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
लौट आये सुमन्त मन्त्री खड़ मली।
मातु रोवैं लखन राम सीता चली॥
राउ ने सब सुना वो चली केकई।
राम हा राम ली राह सुरधाम की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
शोर उठा अवध वासियों का घना।
रानियां छुट गईं रो उठा जो सुना॥
राजगुरु ज्ञान दे सबको कीन्हो मना।

तेल में देह धर दूत भेज्यो पुरी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
हों भयंकर सपन उत भरत राजको ।
दूत आया चले वेग रथ साज को ॥
देख अशगुन बढ़ायो तुरत बाज को ।
इन्द्र पुरसी अवध आज सुनसान थी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
केकई से कथा सब भरत ने सुनी ।
शीशधरि गिरपड़े क्यों न बाभ्भिन बनी ॥
घोर व्याकुल कि जैसे मणीबिन फणी ।
कूबरी के हुकम रिपुदमन लात दी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम हे राम कह कर पुकारें भरथ ।
मां अभागी बने अब तुम्हारे भरथ ॥
दोष देंगे सभी मां के प्यारे भरथ ।
मांगते वर न जीभी अनल में जरी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
रो उठी नारि नर जब पधारे भरथ ।

मातु कौशल ने गोदी बिठारे भरथ ॥
राजगुरु ज्ञान दे क्षुब्ध निवारे भरथ ।
भेंट करि साथ लावें यही राय दी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
जो सुना सो चला संग भरथ राज के ।
भेंट चलके भई आगे गुहराज से ॥
साथरी देखि रोये जननि काज से ।
साथ परिवार के पार भे जाह्नवी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
फिर भरद्वाज मिल पार यमुना भये ।
भेंट की लालसा प्रेम में न्हागये ॥
धूलि उत्तर निरखि राम सकुचा गये ।
लक्ष्मण ने उछल ले धनुष ताल दी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
नाथ आज्ञा दो आयुध चलाऊंगा मैं ।
राज मदका नशा सब उतारूंगा मैं ॥
पाछिले क्रोध का फल चखाऊंगा मैं ।
साथ शंकर हो मारूं शपथ नाथ को ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

बाद नम राम बोले सुनो हे लखन।
राजमद हो भरत को असम्भव सपन॥
भ्रात भैया मलल्ला है मिलना कठिन।
इन्द्रपुर की हुकूमत उन्हें घास सी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
देखिये भरत रामजी का मिलन।
एक रंग एक ढंग प्रेममय दोउ जन॥
गोद में प्रभु उठाये सुघर से सुमन।
शत्रुघन से मिले भेंट रघुनाथ की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
मातु सीताको वन्देउ भरत हो मगन।
लक्ष्मण से मिले सुर गुरु आगमन॥
राम आये किये गुरु के लागे चरन।
कैकई से मिले पहले रघुनाथ जी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
मातु कौशल सुमित्रा के परस्यो चरन।
नारिनर पुरके जो जहुंमिले सियरमन॥
आज्ञाकरि पुनि पिताकी कियो दुखहरन।

आगये भेंट करने जनकराज जी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
जानकी जी मिली तब पिता के गले ।
धन्य है धन्य सीता सती निर्मले ॥
केकई थीं दुखी मृत्यु होती भले ।
रात चितामें व्याकुल भरथ काट दी ।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
प्रात होने लगा बन में दरबार था ।
कौन हो चक्रवर्ती अवधराज का ॥
राजगुरु ने कहा ढूंढ़ो ऐसी दवा ।
राम लौटैं हो उन्नति अवधराज की ।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
हाथ जोड़े भरथ ने कहा दुख भरे ।
राम सीता लखन लौट जावें घरे ॥
शत्रुहन साथ हम बन उदासी फिरें ।
रो उठें धन्य भक्ती भरथ भ्रात की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राज्य साम्राज्य का गेंद सा था पड़ा ।

ठोकरैं लग रहीं त्याग कितना बड़ा ॥
इन्द्र माया असर से उठे हड़बड़ा ।
मैं करूंगा जो आयसु सिया नाथकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम बोले कि आज्ञा पिता मातु की।
पालता गर नहीं पुत्र है पातकी ॥
हो न अपयश न आत्मादुखी तातकी।
पादुका लो व्यवस्था करो राज की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राय ठहरी कि शासन सम्हालें भरथ।
राजगद्दी खड़ाऊं बिठालें भरथ ॥
राम आज्ञा मुदित चित्त पालें भरत ।
हो गवन लौट खुद भी बने तापसी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

आरण्य काण्ड

राम सीता शिला पर ही आसीन थे ।
रूप वायस धरे इन्द्र सुतलीन थे ॥

चोंच सीताके हत शठ भगा चीन्ह दे ।
बाणबिन फरहन्यो प्रभु भ्रम्यो तिहुपुरी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी

लौट आयो शरण प्रभु कियो एकनयन ।
मातु सीताका अनसुइया जीसे मिलन ॥
राम शरसे बिराधी का सुरपुर गमन ।
नाथ आगे चले देख नर पंजरी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी

कौल निश्चर मिटाने का कर प्रभु चले ।
आगे आनाथ कुम्भज ऋषीसे मिले ॥
गीधसे मिल गोदावरि के तट रह भले ।
शूर्पणखा रुचिर भेष धर के चली ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी

रामको देख बोली कि संसार में ।
हो पुरुष बस तुम्हीं और हूँ नार मैं ॥
जोड़ी ब्रह्मा संवारी हूं लाचार मैं ।
राम सीता चितै शेष पै भेज दी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी

लौट आई भयानक बनायो बदन।
लक्ष्मण काटदी नासिका औ श्रवण ॥
भाग त्रिशिरा खरादिकसे कीन्ह्यो रुदन।
फौज चौदह सहस राम ने काट की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
रोके रावण से सारी कही दुर्व्यथा।
लंकपति मिलके मामासे बोला कथा ॥
राम का तेज मारीच सब कह चुका।
नाचली तो हिरन बनचला खलछली ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
जानकी सौंपि पावक रचीं जानकी।
सामने था हिरन जगमगाती कनी ॥
नाथ लाओ तो सुन्दर बने आसनी।
सौंप सीता लखन को चले मदहरी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
भागता लुक छिपा छल भरादूर तन।
बाण मारा गिरा राम फिर हा लखन ॥
मातुसीता कह्यो जाव बिपता कठिन।

शेष बोले कि त्रैलोक्य में को बली ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
जानकी ने कहा तुमको जाना पड़े ।
क्या रची नाथ माया हुये उठ खड़े ॥
रेख खींची कि अन्दर रहो महिसुते ।
सौंप वनदेव दिशि चलपड़े अहिपती ।
राम जी राम जी राम जी राम जी
शून्य देखा तो रावण यती भेष धर ।
मातु भिक्षा दे फल देने लागीं मधुर ।
बांधी भिक्षा न लूंगा दो रेखा निकर ।
रेख लाँघी कि आफत पड़ी जानकी ।
राम जी राम जी राम जी राम जी
रूप बदला कहा मैं हूँ निश्चर पते ।
डाट दी रहु खड़ा आगये रघुपते ।
काल मत मोल ले दुष्ट पापी मते ।
ध्यान में वंदि पथ रथ बिठायो सती ।
राम जी राम जीं राम जी राम जी
चीखती थीं तड़पती बिचारी सिया ।

आ अवध नाथ रक्षा करो हा पिया।
लक्ष्मण हो कहाँ पा गई जो किया।
जानकी नाथ दुख में तेरी जानकी।
राम जी राम जी राम जी राम जी
रो रहीं पीटतीं सर बिकल दुख भरी।
कैकई के जो मन में वही बिधि करी।
दौड़ रक्षा करो नाथ खल छल अरी।
गृद्ध ने आर्त आवाज़ सुन हाँक दी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
ठाढ़ रह दुष्ट है बल जवानी नहीं।
नारि है राम की दुष्ट जानी नहीं।
ऐसा मारूं रहे जिन्दगानी नहीं॥
मार चोंचों की रथ से गिरा गढ़पती।
राम जी राम जी राम जी राम जी
बाण खींचा कि मारूँ तो काटा धनुष।
भा बिकल लंकपति खड्ग खींच्यो धनुष।
पंख काटा गिर्‌यो राम हा राम मुख।
धन्य हो गृद्ध हो गई सफल जिन्दगी।

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
यान सीतहिं चढ़ा लैके आकाश से ।
जैसे पीड़ित मृगी व्याध के पाश से ॥
फेंकि कपि शृंग भूषण बसन हांक दे ।
प्रेम भयकार थका बाग़ में राख दी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम लौटे मिले रास्ते में लखन ।
भ्रात आये अकेली सिया छोड़ बन ॥
देख आश्रम बिकल आज रघुबंश मन ।
जानकी तू कहाँ है प्रिये जान की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
वृक्ष खग मृग लता पक्षियो दो बता ।
प्राण प्यारी हमारी का है कुछ पता ॥
हाय बिधिने दिया आज दारुण व्यथा ।
लक्ष्मण भे बिकल लखि दशा नाथकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
रास्ते में मिला गिद्ध घायल पड़ा ।
कह गया जैसे रावण से पाला पड़ा ॥

युद्ध के बाद दच्छिण लिये रथ बढ़ा।
प्राण छोड़ूंगा रक्खूँ न अब जिन्दगी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम बोले रखो प्राण हँस खग कहा।
चाहिये क्या जब सन्मुख जगतपति खड़ा॥
तात कहिये पिता से न सीता कथा।
बंस युत लंकपति खुद कहेगा सही ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
गृद्ध ने ध्यान साधी औ मूंदे नयन।
सामने नाथ के उर में राखे चरन ॥
प्राण छोड़े बजी दुंदुभी उत गगन।
पातकी गृद्ध की नाथ ने श्राद्ध की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
खोजते दोनों भाई चले वन सघन।
मारिदीन्ह्यो कबन्धी भा सुरपुरगमन ॥
शबरी आपको ले गई अपने सदन॥
बेर खा खा सराहैं बड़े स्वाद की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

भीलनी ने कहा नाथ कीन्ही कृपा।
जाव पंपापुर कपिपति लगै है पता॥
आगे नारद मिले कुछ भई बारता।
खोजते खोजते बढ़ चढ़े रघुपती॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥

किष्किन्धा काण्ड

राम ऋष्यमूक गिर ढिग गये बढ़ जभी।
देख सुग्रीव विस्मित सकान्यो तभी॥
जाव बजरंग देखो ये हैं कोतपी।
बिप्रबन नाय पद नाथ से बात की॥
राम जी राय जी राम जी राम जी॥
हालसुन चीन्ह प्रभुगहि चरण सुतपवन।
लै शिखर पर गये लागे कपिपति चरन॥
हाल दोनों तरफ का कह्यों कपि मगन।
मित्रता गँठ गई राम कपि नाथ की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
राम लखि पट व भूषण लगायो गले।

हाल सुग्रीव अपना सुनायो भले ॥
भ्रात है नाथो वैरी दिनो दिन खले।
राम बोले जरूरत है एक बान की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
सात ताड़ों को ढाया चला एक सर।
वालि ढिग तालदी हांक कपिपति निडर॥
मार से भाग बोला है खूनी जिगर।
भूल होवे न माला गले डालदी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
ताल ठोंकी चला बालि लेकर गदा।
रोक तारा कहै हैं जगतपति न जा ॥
राम लच्छमण से देवर ने की मित्रता।
वालि बोला हैं समदर्शी रघुनाथ जी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
ले गदा दोनों भाई लगे मारने।
देखते थे बिटप ओट जग तारने ॥
मित्र जो देखते जब लगा हारने।
ओट से बाण मारा गिरा आह की ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

सामने देख प्रभु को उठा हो मगन ।
बैठि घायल हृदय राखि रघुवर चरन ॥
है मुहब्बत दिली सख्त बोला वचन ।
धर्म के नाम पर वाह क्या मात दी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

बालि वैरी व सुग्रीव साथी बना ।
राम बोले त्रिया ने किया था मना ॥
दुष्ट भगिनी पतोहू सुतानुज धना ।
बक्र देखे तो मारे न है पातकी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

सामने आप तब भी रहा पाप क्या ।
हाथ फेरयो प्रभू चाहते हो बचा ॥
मौत ऐसी मिलेगी किसे कपि कहा ।
सौंपि अंगद लियो राह सुरधाम की ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

राज सुग्रीव युवराज अंगद भये ।
जीतने दिन लगे कोप लछमन किये ॥

वीर हनुमान सुग्रीव से कहि गये।
युद्ध है चल पड़ो पत्रिका बाँट दो ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
बाण ताना लखण अब जलाऊं नगर।
राज मद चूर कर दूं न राखूं कसर ॥
मातु अंगद पवन सुत मिले दौड़ कर।
हाल सुन मिल गलेसे अनल शांतिकी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम से मिल के सुग्रीव माँगी क्षमा।
यूथ के यूथ हों भालु कपि सब जमा॥
शारदा क्या गिनै फौज कितनी रमा।
पूछते थे सभी है कुशल श्याम की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
छेदीलाल यह सुग्रीव ने कह दिया।
मास भर में बतादो कहां है सिया ॥
तोड़ कानून आया तो हो तपसिया।
वीर बजरंग को मुन्दरी की पहचानदी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

खोह सरिता सघन वन जलाशय बना।
भालु कपि देखि निश्चर करैं खातमा॥
प्यास थी एक तालाब सुन्दर बनो।
योगिनी थी कुटीथी बनी घास की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
पूछ बैठाय बोली कि मूदो नयन।
आंखखोला लवन सिंधुजल औगगन॥
बोल अंगद उठे हैं दोऊ दिशि मरण।
खोह से वृद्ध सम्पाति ने हांक दी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
भूखसे मर रहा मैं जमाने से था।
पेट भरलूं मिले भालु कपि विधिरचो॥
देखा अंगद कहा गृद्ध रावण कथा
गृद्ध बोला कि लंका में हैं जानकी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
पार सागर करो चार सौ कोस है।
जाऊं अंगद कहा लौटती ठोस है॥
बोले कुशेप बुड्ढा हूं अफसोस है।

मौन क्यों भालुपति कह हनूमान जी।
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
था इसारा कि विकराल कपि का बदन॥
लंक लाऊं उठा तोड़ दूं या गगन।
या कहो वंश रावण सहित हो निधन॥
सीख जैसी हो वैसा करूं काम जी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥

सुन्दर काण्ड

भालुपति ने कहा केवळ लाओ पता।
वायु सुत ने कहा तो परखिये सखा।
दाबि पर्वत उड़ा राम के वान सा।
रास्ते में मिटी साध मैं नाक की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
रोक मग ठाढ़ सुरसा पसारे बदन।
दूगना चौगना अठगुना कपिका तन॥
रूप धरि सूक्ष्म निकले पवनसुत मगन।
जाव होगी विजय नारि आशीष दी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
दैत्य बधि शैल चढ़ि देखी लंका छटा।

लंकिनी मुष्टिका हनि मशकवनि घुसा।
राज मंदिर पुरी में न लागे पता।
धुनि सुनाई पड़ाई राम के नाम की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
राम का नाम अंकित निहार्यो भवन।
भा विभीषण पवनसुतका सुन्दरमिलन॥
बाग आशीक माताको देख्यो मिलन।
पेड़ पल्लव में छिप गए हनूमान जी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
नारि दल साथ रावण लिये आगया।
देखले एक नजर भर हमें तू प्रिया॥
दुख भयभीत नीति मगन जग्रिया।
जिंदगी भर गुलामिन हो मंदोदरी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
ओट तृण के कहा नीच पापी अधम।
चोर सूने में लाया नहीं थे लखन॥
तू कहाँ एक जुगनू प्रभू सूर्य्य सम।
है खबर भी तुझे राम के नाम की॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

घोर अपमान सुन खींच तलवार को।
रोकवी मय सुताना उचित वार को॥
बोला उद्धा महीना अवधि तार लो।
धौंस देकर गया त्रास दो राक्षसी॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

स्वाब त्रिजटाने सबसे बुलाकर कहा।
छेदीलाल कुशल है करो मित्रता॥
मातु बोलीं अनळ दो जलूं रचि चिता।
देखि भय भीत कपि डाळ्दी मूंदरी॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

जानि पावक उठायो अंगूठी मिली।
हर्ष विस्मय दुखी रामकी धुनि मिली॥
हो प्रकट सब कथा कह गये कपिबली।
पाय बरदान बोले छुधा मातु थी॥

राम जी राम जी रान जी राम जी ॥

खाव फल कपि लगे खान तोड़े शिखर।
अक्षय आदि राक्षस बधे प्रभु सुमिर॥

इन्द्रजित ब्रह्म शर से बंधे कपि निडर ।
जाय देखी शकल राज दरबार की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
हंस के लंकेश बोला बता तू पता ।
क्यों उखाड़े विटप क्यों निशाचर हता ॥
दूत हूं राम का आ रही क्यों कजा ।
जानकी ले शरण जा कुशल जानकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
मार डालो बिभीषण ने कीन्हो मना ।
बोल उट्ठे सभी पूंछ ही दो जला ॥
तेल घृत वस्त्र बांधे न पुर में बचा ।
पूँछ बाढ़ी सबों ने लगा अगदी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
रूप लघु धरि बढ़ी पूंछ चढ़िगो सदन ।
दी लगा आग उन्चास डोली पवन ॥
धांय धां पुर जलै जैसे होली दहन ।
गृह बिभीषण बचा सिंधु कूदे बली ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

मातु दे कुछ निशानी करो अब विदा।
देके चूणामणि बोली कह्यो जा व्यथा॥
मास भरि की अवधि जो न आये सखा।
तो समझियो न संसार में जानकी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
मातु समझाय गरजे निशाचर विकल।
आगए पार भेंटे सकल राम दल॥
बालिसुत कीश ले पुर लगे खाने फल।
घोष जयराम आ पहुँचे युवराज जी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
राम हंस के पवनसुत लगायो गले।
देख चूणामणि मोती से आँसू ढले॥
पूछ सीता विपति में दुखी खल दलें।
धन्य हो धन्य योधा हनूमान जी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
फौज सुग्रीव साजी बड़ी शान से।
डगमगाती धरनि शेष भय मानते॥
छेदीलाल चले भालु कपि आन से।

जाय सागर किनारे पड़ो छावनी ॥
रामजी रामजी रामजी रामजी ॥
लंक में इस तरफ थी मची खलबली ।
दूत ऐसा तो हैं राम कैसे बली ॥
है कुशल ना विकल दैत्य कुल मंडली ।
हाथ धरि पिय को समझाय मन्दोदरी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
नारियों के खसे गर्भ हूंकार सुन ।
दूत ऐसे हैं जिनके करो रार तुम ॥
जीत सकपे न ब्रह्मा न त्रिपुरारि तुम ।
जानकी फेर दो है कुशल जानकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
सुन हंसा नारि असगुन मनाती है क्या ।
कांपता आज त्रैलोक हमसे दबा ॥
भालू वानर हैं खाभी मिलो तोहफा ।
बात काटी चला बात अभिमान की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम दरबार में चल पड़ी चारचा ॥

आगई फौज सागर पर सुनके हंसा ॥
है हुआ चुप्प बैठो औ देखो मजा ।
आ विभीषण ने भ्राता से अर्ज की ॥
रामजी रामजी रामजी रामजी ॥

गिर चरण भ्रात बोला कि एक सीखदो ।
राम से बैर कर मोल मत मौत लो ॥
छोटा भाई हूं भैया मेरी सीखलो ।
साफ कहता हूं हैं विष्णु अवतार हो ॥
रामजी रामजी रामजी रामजी ॥

मालवन्त ने कहा ठीक यह राय है ।
नीति की क्या चले जबकि अन्याय है ॥
बोल उठा विभीषण चरण नाय कै ।
माफ कर देंगे गर भेज दो जानकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

क्रोध से लात मारी औ बोला रिसा ।
खाय मेरा औ दुश्मन का है चापका ॥
बोल त्रैलोक्य में कौन मुझसे बचा ।
बेवकूफों के आगे मचा धांधली ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
नाथ कर पद चला आई जाऊंगा मैं ।
राम की ही शरण मुक्ति पाऊंगा मैं ॥
काल सरपर भला क्या सिखाऊंगा मैं ।
चल हड़े रट लगी राम के नाम की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
आगवानी में अङ्गद हनूमान जी ।
साथ लाये जहां पर लखन राम जी ॥
दौड़ भेंटे कुशल पूछ सन्मान की ।
राज पायो विभीषण बजी दुन्दुभी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम बोले विभीषण उदधि पार का ।
कौन तदबीर जिससे मिले रास्ता ॥
भक्त कह आप इच्छा से हो चारसा ।
नीति कहती है पहले करो बीनती ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
शेष बोले हम कायरों की तरह ।
मांगना जांचना गिड़गिड़ाना विनय ॥

सोखले सिन्धु भाता हमें मंत्र यह।
नाथ बोले मुनासिब प्रथम आजिजी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
आय बैठे उदधि तट कुशासन बिछा।
दण्डवत करि बिराजे मिले रास्ता॥
दूत आये बिभीषण का लेने पता।
भेद खुलते ही कपियों ने की दिल्लगी॥
राम जी राय जी राम जी राम जी॥
काट लो राय ठहरी श्रवण नासिका।
दूत लागे प्रभू की दुहाई मचा।
आ दयावन्त लक्ष्मण ने दीन्हों छुड़ा।
शेष ने पत्रिका दूत के हाथ दी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
मूढ़ से यह जबानी कहो दास्तां।
आ शरण साथ सीता न दे मुफ्त जां॥
क्यों मिटायेगा दुनियां से निश्चरनिशां।
दूत ने लंकपति से खुली बात की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी

कष्ट अपना दुहाई से जैसे बचा।
पद्म अठारह हैं कीश थी चारचा॥
कोई तुमसे न कम हैं होना खफा।
ठंक जारी है जिसने वह सब से कमी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
दाँत पीसै सभी लंक डालैं चबा।
नाथ आयसु बिना हाथ मीजें सभा॥
सिन्धु की बात सुनकर ठहाका हंसा।
वाह क्या अब मचल सिंधु से ठानदी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
पत्र काढ़ा कि पहले लखन ने दिया।
बाम कर से लिया पढ़ सचिव ने दिया॥
नाश मत बंश का कर मिला दे सिया।
विष्णु शिव अज मदद दें बचेगा नहीं॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
हंस कहा छोटे तापस की सुन बात लो।
भूमि पर हैं खड़े चाहैं आकाश को॥
दूत बोला न समझो कम रघुनाथ को।

हाथ जोड़ूं मिलो नाथ दे जानकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
लात मारी चला दूत रघुनाथ पर ।
कह कथा तर गया दुःख था आप पर ॥
तीन दिन आज गुजरे उदधि घाट पर ।
राम बोले न शठ से चली बिनती ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
लाव लक्ष्मण धनुष अब चलाऊंगा मैं ।
बीज ऊसर में बो क्या कटाऊंगा मैं ॥
ज्ञान कामी को कब तक सिखाऊंगा मैं ।
लक्ष्मण ने कहा ठीक है बात भी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
क्रोध से बाण खींचा प्रलय होगया ।
छटपटाने लगे जीव भय हो गया ॥
आग भड़की उदधि का समय होगया ।
विप्र बन थाल मोती जवाहर मणी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
भेंट धरि हाथ जोड़े शरण हूं शरण ।

भूखता था प्रभू अयति सीता रमण ॥
पार उतरे कटक हंस कहो दुख हरण ।
नाथ नल नील शिल्पी उन्हें श्राप थी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

लंका काण्ड

सिंधुकी सीख सुन प्रभु बुलाये सचिव ।
मित्र पुल बांधि उतरो सुमिर गौरि शिव ॥
भालु बंदर बुलाकर कहा देर क्यि ।
चौतरफ सब भगे जय अवधनाथ की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
गेंद सा दौड़ लावें उठावें शिखर ।
बांध नल नील सुन्दर बनायो डगर ॥
नाथ स्थापित शंकर कियो प्रेम कर ।
पूज रामेश्वर भव से तरें पातकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
सेतु पर भीर थी शोर घन घोर था ।
पार उतरैं उड़ै कूदना दौड़ था ॥

युद्धस्थल में जाकर के डेरा पड़ा।
खांय फल भालुकपि दैत्यकुल खलबली ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
पार उतरे सुना भा दशानन सभय।
नारि बोली कि अब भी पिया है समय ॥
बैर प्रीती बराबर से करिये न भय।
श्री जगतपति चराचर का औतार जी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
बक्र दृष्टी करैं भस्म संसार हो।
बैर तिनसे किये कैसे उद्धार हो ॥
चौथे पन में भजन नीति अनुसार हो।
नाथ रत्ता करो मेरे अहिवात की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
हंस पड़ा मय सुता को उठा गोद में।
कौन मेरे बराबर है त्रैलोक में।
नारि पागल है होती वृथा शोक में।
राज दरबार आया जुड़ी मन्डली।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

आज प्रस्ताव में युद्ध का था विषय।
चापलूसी सचिव सब कहैं है विजय।
भालु बानर हैं स्वामी करो दूर भय।
साफ दिल से प्रहस्त ने खुले बातकी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
चापलूसी से चलता न अब काम है।
एक आया था बानर फुका ग्राम है॥
भूख थी क्यों न खाया पकड़ थाम कै।
जी हजूरों से आशा न उपकार की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
क्रोध करि सुतसे बोला चलाजा चला।
बोला सरकाळ अच्छी न ळागे दवा॥
नृत्य होने लगा चापलूसी सभा।
चन्द्र छबि पर इधर चारचा रामकी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
देख दक्षिण चलायो प्रभू शर हंसे।
ताज रावणके माहि पर अचानक खसे॥
देखअशगुन निशाचर बिकल दुखबसे।

चलपड़ा घरऔ मीटिंगभी बरखास्तकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
नारि ने नीति के फिर कहे मृदु वचन ।
बेंत फूले न अमृत ही बरसैं गगन ॥
प्रातः होते उठे नाथ रघुवंश मन ।
युद्ध कौन्सिल में अब युद्ध की बातथी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
वृद्ध ऋक्षेश बोले कि युवराज को ।
नाथ भेजो कहै नीति रण साज को ॥
जाव अंगद चतुर हो करो काज को ।
हो खुशी चल पड़े जय अवधनाथ की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
लंक घुसते भिड़ा मग में रावण पिसर ।
मारडाला पकड़ करि चलाहो निडर ॥
देखते सब बिकल औ भगे नारि नर ।
सोई आया है जिसने गढ़ी जार दी ।
राम जी राम जी राम जी राम जी
सिंह सा बैठ मयफिल में रावण कहा ।

कौन हो राम का दूत हूँ मैं सखा ।
मित्रता थी पिता से तुम्हारी सदा ।
पूज अज शिव खबर बिन संतान की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
पाय वरजीत दिग सुरलख्या अग्निसम ।
मोह अभिमान वश ही हरी नार तुम ॥
खैर अब भी न बिगड़ा दशन दाबितृण ।
हो खता माफ गर ले मिलो जानकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ।
मूढ़ चुप मित्रता कब तेरे बाप से ।
नाम अपना बता क्यों फिरे ताप से ॥
नाम अंगद मिला बालि है आप से ।
फिर सकुच कुछ कहा क्या खबर बापकी ।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
कीश बोले कि दस दिन की ही देर है ।
दोस्त से जाय मिलना रहा टेर है ।
राम बैरी बचे तब तो अन्धेर है ।
व्यंग सुन आँख बदली असुरनाथ की ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
जानिके नीति ही सह रहा कटु वचन।
कीशकह पर त्रिया का इसी से हरन ॥
डूब मर धर्म धारी है नकटी बहन।
भाग्य अच्छी थी तुमसे मुलाकात की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
कोप बोला भुजा देख अंगद जरा।
शम्भु बैठे थे कैलाश लीना उठा ॥
कौन दल में तुम्हारे जो लड़ले भला।
लंक जिसने जलाया वही कपि बली ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी।
हंस पड़े कीश बोले जलाया नगर।
दूत छोटा है सुग्रीव का तेज चर ॥
कौन जस सिंह मेंढुकी को मारे अगर।
ख्याल चत्री का ब्राह्मण के संतान की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
हंस कहा बंदरों में भी है खूबियाँ।
नाच गा कूद मालिकको खुस कर दियर॥

खूब तारीफ करलो समझ हम लिया।
तेरी बातों की हमसे न परवाह की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
ठीकगाहक हो गुण के कहा सुत पवन।
मारि अक्षय ढहा बाग लंका दहन ॥
आप थे भी यहीं पर किया सब सहन।
खूब तारीफ दुनियाँ में है आपकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
हँस पड़ा है शरम खा लिया बाप को।
कीश बोले कहीं खा न लें आपको ॥
कौन रावण हो यह तो पता आपदो।
बालि को कांख बलि या सहसबाहुकी।
राम जी राम जी राम जी राम जी।
मैं हूँ रावण जो त्रैलोक का ताज है।
थरथराते सुरासुर व यमराज है ॥
कौन रावण हूँ तू देखता आज है।
कौन हस्ती हैकपि भालुइन्सान की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ।।

मान जा राम शत्रु से छूटै खोपड़ी।
भालु कपि गेंद खेलें बना चौकड़ी॥
रोक सकता न ताक़त कोई हो बड़ी।
गाल तब ना चलै बात अभिमान की।
राम जी राम जी राम जी राम जी
कुम्भ भाई बहादुर सुत मेघनाद हैं।
बांध पुल बस बहादुर बने आज हैं॥
काटशिर शिवपे अर्पण का अनुराग है।
क्या ज़रूरत थी दुश्मन से पैगाम की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
कीश बोले कि करता हूं बाज़ीगरी।
दुष्ट सूने में साधु बन सीता हरी॥
क्या करूं तोड़ लंका मिटा निश्चरी।
मातु के साथ ले जाता मन्दोदरी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
दाँत पीसा कि बन्दर मरेगा यहाँ।
बाप ने जब निकाला तो बनमें रहा॥
ऐसे इन्सान को खाय निश्चर सदा।

कीश निन्दा सुनत महि पटक हाथ दी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
डगमगानी धरा गिर पड़े सब मुकुट ।
चार अंगद फिके राम जी के निकट ॥
झुक गया सच से बोला खफा हो विकट ॥
जो पकड़ चार बन्दर है आजादगी ।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
है नहीं हुक्म वरना दिखाता मजा ।
बोरि देता मैं वारिध में लंका उठा ॥
कीट गूजर सी लंका मैं जाता चबा ।
क्या करूं ठीक है राम का बान ही ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
खूब झूठा है तू बालि गप्पी न था ।
कीश कह झूठ सच का बताता पता ॥
लो पटकता हूं पग लेयगा जो उठा ।
हारते हैं हम सीता फिरैं राम जी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
दौड़ उड्डे निशाचर मची खलबली ।

इन्द्रजित आदि दौड़े रहे जो बली ॥
झूलते ही रहे ना चलाई चली ।
देखि कपि बल उठा कोप दशमाथ भी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
जा शरण राम के धर चरण कपि हटा ।
कुछ सकुच बैठ सिंहासनमें सर लचा ॥
सोचले अब भी रावण बुरा औ भला ।
साफ कह करके अंगद गये छावनी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
था बिकल जाय बैठा जो रनवास में ।
मयसुता ने कहा मत पड़ो त्रास में ॥
दूत ऐसे हैं जिनके भला पास में ।
सोच लो राम हैं ब्रह्म अवतार ही ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
बोलि अंगद कथा सुन बुला प्रभु कटक ।
चार द्वारों में हल्ला करो बेधड़क ॥
चारि टुकड़ी बना सौंपि नायक प्रमुख ।
गोंड़ दो तोड़ दो फोड़ दो रिपु गढ़ी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

राम का हुक्म सुनते गरज सब पड़े ।
घेर के तोड़ फाटक नगर में घुसे ॥
हुक्म रावण से निश्चर समर में डटे ।
खाय कपिभालु करलो क्षुधा शान्तभी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

भालु बानर चढ़े गढ़ रहे कर उद्यम ।
ढा दिये सब कंगूरे फिरैं काल सम ॥
भाकोलाहल निशाचर भिड़ें ठोक खम ।
मारसे हो विकल दैत्य सेना भगी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

कोप बोला भगा तो मेरे हाथ से ।
काट डालूं न छोड़ूं लड़ो माथ दे ॥
लौट निश्चर पड़े फिर भिड़े हांक दे ।
भालु बानर भगे क्या गजब मारथी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

द्वार घननाद हनुमत का संग्राम था ।
थे बली दोऊ दिशि दोऊ का नामथा ॥

देखा सेना में बजरङ्ग कोहराम था ।
लात मारी घुसे गढ़ में हनुमान जी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
देख अँगद घुसे लंक दोनों जनें ।
राम मन्दिर कंगूरे लगे तोड़ने ॥
मार मुखिया उठा फेंके नृप सामने ।
धूम लंका में अंगद हनूमान की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ।
नारि रोवैं कि रावण ने क्या कर दिया ।
मोल झगड़ा ये नाहक में क्यो लेलिया ॥
लंक बिध्वंस निश्चर मरें शतियां ।
कीश लौटे हुई जिस घड़ी शाम थी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
प्रात होते बिगुल युद्ध का फिर बजा ।
राम रावणकी जय करि दोऊ दल भिड़ा ।
भालु बानर की मारो से रिपुदल हटा ॥
हो अंधेरा गया छा गई निश्चरी ॥
रामजी रामजी रामजी रामजी ॥

भालु बानर विकल सूझता कुछ नहीं।
राम से बात दल की बिभीषण कही ॥
बाण मारा तिमिर नाश सेना बढ़ी।
सेन अंगद हनुमान ने नाश की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

शामको सेन लखिप्रभु विगतश्रम किया।
बोलि रावण ने अपने सचिव सब लिया।
क्या करें सेन आधी हुई तफसिया ॥
मालवन्त ने कहा भूल है आपकी।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

आप सोचें स्वयम् राम अबतार हैं।
जानि नाहक करैं आप भी रार हैं ॥
भेज सीता मिलो रार भी पार है।
बोल उठ्ठा जठर चाह है मार की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

घर गया कोप घननाद ने तब कहा।
भोर होते चखाऊंगा सबको मजा ॥
प्रात होते दोऊ दलमें झुरमुट पड़ा।

हांक सबने सुनी बीर घननाद की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
तापसी हैं कहां भालु बानर कहां।
भ्रात द्रोही विभीषण की आई कज़ा।
बाण झरबिन्द कपिदळ बिकल सर्वथा।
आज हनुमान घननाद की मार थी ॥
रामजी रामजी रामजी रामजी ॥
कीश क्रोधित हन्यो वेगि पर्वत उठा।
जाय नभ परबहुरि राम पै जा डटा ॥
गालियां बक औ माया दिखानेलगा।
राम सर से ही माया हटी निश्चरी ॥
रामजी राम जी राम जी राम जी ॥
मांगि आज्ञा लखन कोपि रोप्यो समर।
इन्द्रजित के मुकाबिल जुड़े आनकर ॥
दोउ योधा लड़े ना रखें कुछ कसर।
होड़ दोनों तरफ लग गई प्राण की ॥
राम जी राम जी राम जी ॥ राम जी
शेष ने सारथी रथ विरथ कर दिया।

भाविकल शस्त्र अपनेसब अजमालिया ॥
क्रोध करि शक्ति मारी प्रबल तकहिया ।
शक्ति लगते गिरे श्री लखनलाल जी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
चाहता था उठालूं मगर ना हिले ।
आय हनुमत दुखी मन उठा ले चले ॥
देख लक्ष्मण विकलआज खलदल मले ।
वैद्यगृह लाये लंका से बजरंग बली ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ।।
गे पवनसुत दवा श्रृंग का पा पता ।
रास्ते में निशाचर ने माया रचा ॥
देख आश्रम कहा साधु जल को क्षुधा ।
लो कमंडल कहा जोर की प्यास थी ।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
सर घुसे तरके मकरी कही सब कथा
मारि निशचर गए ना दवा का पता ।
शैल लीन्हे अवध ही चले प्रभु सखा ।
बान बिन फर भरथ ताक के मार दी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
बाण लगते गिरे राम का नाम ले।
देख दौड़े भरत हा सखा सामने॥
बोलते ही नहीं चोट है जांघ में।
प्रेम सच तो विगत पीर कपिनाथ की।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम का नाम ले उठ पड़े भक्त वन।
दौड़ भेंटे भरत प्रेम में हो मगन॥
धन्य हो धन्य कपि जो मिले प्रभु चरन।
सुन कथा सब विकल भे भरतराजजी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी
बान पर शैल युत बैठ भेजूं वहाँ।
मोह आया कि बोझा सहेगा कहाँ॥
होश आया प्रभू जाऊँगा बाण सा।
बंदि कपि चल पड़े जय अवधनाथ की।
राम जी राम जी राम जी राम जी
रात आधी गई राम जी थे विकल।
हा उठो बंधु भैया को दुख है प्रबल॥

जानता तो पिता बात जाती भी टल।
सब मिले भेंट मुश्किल सगे भ्रात की।
राम जी राम जी राम जी राम जी
स्वर्ग में है पिता शत्रु ढिग जानकी।
मातु सौंप्यो हमें अब पड़ी जानकी॥
क्या दिखाऊं अवध में शक्ल आपनी।
नारि कारण सहोदर की अपघात की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
तड़फड़ाते उठो बन्धु समझाय दो।
क्या कहूंगा भला कुछ तो बतलाय द॥
रो रहे पीट छाती उठो हो उठो।
थे विकल शैल लाए हनूमान जी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
वैद्य ने दी दवा उठ पड़े लक्ष्मण।
दौड़ भेंटे कि जैसे मिले नाग मणि।
वैद्य को भेज लंका दियो ताहि क्षण।
हो विकल लंकपति गा शरण भ्रातकी।
राम जी राम जी राम जी राम जी॥

जागि पूछा बताया सिया का हरण।
भ्रातखर आदि भगिनी अच्चयका मरण।
भ्रात अच्छान फल है कहो कुंभकरण।
भेंट ले अब चलूंगा शरण नाथ की।
जी राम जी राम राम जी राम जी
खा महिष मद्य इकला समर को चला।
भ्रात से आय मग में विभीषण मिला।
दैत्य कुल में भये रत्न हो तुम सखा।
बन्धु जा मैं चला गोद में काल की।
राम जी राम जी राम जी राम जी।
भालु कपि दौड़ मारें विटप शैल ला।
ना मुरैं ना टरैं भालु बानर चबा॥
भालु कपि थे विकल घोर संग्राम था।
दौड़ि मुष्टिक हन्यो तब हनूमान जी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
मूर्छित भा उठा मार मुर्छित पवन।
फौज भागी बहादुर गिरे सब धरन॥
दावि सुग्रीव रण में चला हो मगन।

छूटि कपि पति श्रवण नासिका काटदी।
राम जी राम जी राम जी राम जी।
क्रोध करि भिड़ गया भालु कपि दल चबा।
खाय मुंह से श्रवण नाक थी रास्ता।
फौज लंका से आई कठिन रण मचा॥
देख ऊधम चले राम के बाण भी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
धान सा जाट मारा समर एक निमिष।
हो प्रलय सा गया लौट आये विशिष॥
क्रोध मय वीर निश्चर समर चार दिशि।
सेन पीछे करी आगे रघुनाथ जी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
शैल से चाहता मारूं रघुनाथ को।
शीघ्र काटा प्रभु दाहने हाथ को॥
काट फिर वाम करदी उड़ा माथ को।
पुष्प बरसे बजी व्योम में दुन्दुभी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥

शाम को फौज लौटी विकल लंकपति।

तेज बल निज पराक्रम कह्यो इन्द्रजित॥
प्रातः होते अनी दोऊ भिड़ी क्रोधयुत।
कोप से इन्द्रजित ने विकट मार की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
मार बाणों के मारा न काटा कटक।
मुर्छित अंगद हनूमान नल नील तक।
व्याळ बन्धन बंधे प्रभु हुआ फिर प्रगट।
गाली गुप्ता बकै शोर इक बारगी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
वृद्ध ऋक्षेश ने तब प्रचारा उसे।
सांग मारी पकड़ खींच मारा उसे।
पैर पकड़ा घुमा लंक डारा उसे।
कैसे मरता रही शक्ति बरदान की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
देव भेजे गरुड़ सब गयो नाग खा।
दूर मूर्छा हुई हड़बड़ाता उठा॥
देख लज्जित हुआ सामने थे पिता।
बेगि उठ के गया यज्ञ प्रारम्भ की॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
देख बोले विभीषण हुई पूर्ण मख ।
जीति जावे न विध्वंस कर दो विमुख ।
जान लक्ष्मण हनुमान अंगद प्रमुख ।
शेष करि प्रण चले रिपु बधौं आज ही ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
काट भैंसे चढ़ाता था आहुति रुधिर ।
भालु बान्नर जुटे मार थी पीठ पर ।
खींच चोटी हनैं लात गर्जै बहुर ।
लेके तिरशूल दौड़ा भगे सब कपी ।
राम जी राम जी राम जो राम जी ॥
मूर्छि अंगद हनुमान सरदार तक ।
फिर लखन पै चलायो रिसान्यो तमक ॥
शीश काट्यो लखन तब गिरा हो मृतक ।
अन्त मरती समय जय लखन राम की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
लंक के द्वार धर लाश दी सुत पवन ।
पुष्प बरसे बजी दुन्दुभी उत गगन ॥

आज लंका पे घर घर मचा था रुदन।
रात भर रो रो समझाती मन्दोदरी॥
राम जी राम जी राम सी राम जी॥
प्रात होते डटे भालु कपि द्वार पर।
बोलिनिश्चर कह्यो राउ तब क्रोध कर॥
लड़ मरो मर मिटो आज जी खोलकर।
अपनी ताक़त पर दुश्मन से तकरार की।
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
फ़ौज दोनों भिड़ीं युद्ध होने लगा।
राव रथ पर औ पैदल प्रभु रण मचा॥
देख रघुपति विरथ शंक लाये सखा।
राम चरचाथी रथ को औ विज्ञान की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
वीर रावण उधर काटता छांटता।
और अंगद हनूं का प्रबल वार था।
युद्ध था या प्रलय आज संहार था।
जोड़ थी आज लछमण व दशमाथ की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥

बाण मारा लखन ने निवारा उसे।
शक्ति त्रिशूल भी काट डाला हंसे॥
नष्ट रथ हो गया बाण उर में धंसे।
मुर्छि गिर फिर उठा मारकी सांगकी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
मुष्टिका कोपि मारयो हृदय सुत पवन।
गिरपड़ा फिर भिड़ा मुष्टिका एकहन॥
टेक दे कपि रुके पुनि भिरे शत्रु सन।
लंकपति ने हनूबल की तारीफ की॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
जागि रावण चला यज्ञ करने लगा।
कह विभीषण नहो मख करोसो सखा॥
भालु कपि दौड मारैं उखाड़ें शिखा।
दौड़ अंगद ने रावण के तक लातदी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
आश छोडी चढ़ा रथ भिड़ा आनकर।
देव बिनती चले प्रभु जटा बांधकर॥
डगमगानी धरनि शर चले तान कर।

मार बाणों के निश्चर अनी छांट दी ।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
देख प्यादे सुरथ भेज सुरपति दिया ।
चढ़ चले युद्ध करने सिया के पिया ॥
देख भीषण समर रावं माया किया ।
राम शर से निमिष में ही माया हरी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम रावण का घनघोर संग्राम था ।
शीश कटते औ जमते यही काम था ॥
हाय औ शीश उड़ते थे कोहराम था ।
क्रोध शर बीस हाथों से संधान की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
शक्ति मारी विभीषण के ही सामने ।
ठेलि पीछे सखा ली स्वयं राम ने ॥
ले विभीषण गदा उर हनी तान के
युद्ध की घात थी फिर दोऊ भ्रात की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
वीर बजरंग हनी लात कीन्ह्यो विरथ ।

युद्ध दोनों का आकाश पृथ्वी तलक ॥
भे बिकल कीश प्रभुके चरण ध्यानरत ।
फ़ौज दौड़ी मदद को हनूमान की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

हो प्रगट फिर छिपे राम सेना बिकल ।
ऐसी माया रची गुम हुई सब अकल ॥
राम शर से हुई शीघ्र माया विफल ।
फिर पकड़ बालि सुतको पछारयो बली ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

बाण घनघोर फिर नृप चलाने लगा ।
शीश भुज कट गिरैं फिर जियें सर्वदा ॥
नील नल शीश पै चढ़ बिदारें नखा ।
युद्ध दशकंध घबड़ाई सुर मंडली ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

सेन मुर्छित भई बीर सरदार सब ।
देख हरषा दई घोर ललकार तब ॥
भालु पति ने दई बढ़ के हुंकार तब ।
ऋक्षपति ने तमकि ताक कर लातदी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

चोट खा गिर पड़ा राव होकर बिकल।
मूर्छा आगई सूर्य्य भी आये ढल ॥
सारथी घालि स्यंदन भई नृप मह ।
रात आधी जगा धौंस दे सारथी।

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

मातु सीता के ढिग निशि गई तिरजटा।
शत्रु मरता नही हाथ नर भी कटा ॥
आप बसती हैं उर में इसी से बचा।
सुन कथा उर व्यथा भई जगतमातु की ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

बोल दूती उठी ना रही देर है।
काटते सर बिकल उर हना फेर है ॥
नारि समझा गई सिय दुखी डेर है।
भे शकुन तब खुशी हो गई जानकी ॥

राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

प्रात होते दशाशन सजायो कटक।
भालु कपि भिड़गये शैल शिलले बिटप ॥

आज थी मार बंडब चटक धर पटक ।
भाग निशचर बड़ो राम को वंडलो ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
दाढ़ काटैं व भागं औ नाच वदन ।
हा बिकल फिर लगा राउ माया रचन ॥
भालु कपि भागि जहंतहं लगे महि परन ।
राम शरसं हां माया को धज्जा उड़ी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
छूट माया भिड़ फिर सभी वीरवर ।
राम रावण का था आज अंतिम समर ॥
बाण की थी झड़ी बूंद सी व्योम पर ।
राव के शीश भुज सं मही सब पटी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम बोले विभीषण ये है बात क्या ।
नाथ अमृम उदर लँकपति के सदा ॥
कांति हत होगई होन अशगुन लगा ।
राम इकतिस हने बाण इकवारगी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

एक नाभी में औ बीस काटे भुजा।
काटे दशमाथ हो गये जगत से बिदा॥
गिर पड़ी लाश दल भालु कपिका दबा।
शीश भुज जा गिरे बैठी मन्दोदरी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
व्योम से हो मगन पुष्प लागे भरन।
दुन्दुभी बज उठी आज सुरथे मगन॥
मयसुता गिर पड़ी केश छूटे धरन।
रो रही आज चिंता थी अहिवातकी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
राम के द्रोह से ही मिली यह सजा।
श्राद्ध पानी तो देता न कोई बचा।
रो उठे फिर विभीषण था भाई सगा।
आज लंकेश लंकेश को श्राद्ध की॥
रामजी रामजी राम जी रामजी॥
दे विभीषण तिलक शेष हनुमान जी।
हाल सुन युद्ध का सब मिली जानकी॥
राम आज्ञा से गज साथ पैदल चली।

जानकी अग्नि को राख ली जानकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
छेद।लाल मिलो जोड़ी सियराम की।
वन्दना देव किन्नर करें नाम की ॥
आपता न विजय प्रभ की बात की।
भालु कपि जा उठे नभ सुधा धार की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
बांद मन कहा आऊं हो जब तिलक।
ओ विभीषण मिले रामसे फिर लिपट ॥
क्या करूं भ्रात मेरा बिलखता भरत।
भक्ति में मेरे पागल बदन खाक की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
राम आज्ञा विभीषण चढ़े फिर गगन।
भालु कपि लखि लुटायेथे भूषण बसन ॥
स्वांग से सब बने राम लागे हंसन।
वीर बल से तुम्हारे विजय प्राप्त की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
यान पुष्पक पे बैठे सिया प्रभु लखन।

भालु वानर चढ़े तब उड़ा लो गगन ॥
आप पुनि पूछे पारावत के ढुहराय वन।
आज फिर बढ़ गई छवि अवधधाम का ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
देव हनुमन्त सैया भरत का खबर।
प्रेमसे हो विकल गुह मिला अंक भर॥
देखतो हो उमा सेवक के प्रेम पर।
आप मिलते हैं जिनमें अधिक चाहकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

उत्तर काण्ड।

आज थापुर अवध में चहल और पहल।
एक दिनका अवधि आइह रघुकुलकमल ॥
चारचा हर जगह आज आप कि कल।
बातक रतेसभी सिय लखन रामकी, रामजी ॥
मातु आनन्द वाते करें हो मगन।
राम आये मनो कोउ चाहत कहन ॥
आज होतेहैं चहूँदिशि सकुन पै शकुन।
आज बेढब दशाथी भरथ राजकी. राम जी ॥

कौन कारण अभी तक न आये रमन।
धन्य हो धन्य भैया तुम्हीं श्री लखन ॥
जानिकपटी कुटिल मोंहि दियोना हरन।
आज आये न तौ ना कुशल प्रानकी, रामजी४
विप्र का रूप धरि आगये सुत पवन।
श्री भरथ को सिया रामजी की रटन ॥
आ गए राम करि दैत्यकुल सब निधन।
हर्षि भेंटे पवनसुत कीप हिंचान की, रामजी ४
राजगुरु को संदेशा सुनायो भरथ।
मातु हर्षीं गले से लगाओ भरथ॥
पुष्प रोचन दही सब मंगायो भरथ।
साथपुरगुरुसहिर लेन अगवानकी, रामजी ४
आगए राम लागे गुरू के चरन।
क्या लिखूं रामजी औ भरत का मिलन॥
दौड़ कर फिर गले से लगे रिपुदमन।
शेष से मिल के सीता से परणामकी, रामजी४
रूप धरि प्रभु अमित भेंटे एक एक से।
मात भेंटी मनो बत्स मिल धेनु से॥

हैं मुदित सब पतोहू सिया भेंट से ।
थाल सुवर्ण से माता करें आरती, रामजी ४
भालु कपि नर बने लागे श्री गुरुचरण ।
मातु कौशल्य चरन फिर लगे सब परन ॥
जानि केकई दुखी राम पहुंचे भवन ।
मोह छूटा सुधा वृष्टि की ज्ञान की, रामजी ४
नाथ मिल के सभी से गए निज सदन ।
राजगुरु हिसुरन से कहे यूं वचन ॥
राजगद्दी का है आज अच्छा सुदिन ।
दूत भेजा जुड़ा क्षण में सामान भी, रामजी ४
हाथ अपने भरथ के निवारे जटा ।
भाई तीनों का स्नान भी हो चुका ॥
बाद में आप न्हाए अलौकिक छटा ।
बैठे सिंहासन में राम औ जानकी, रामजी ४
वेद मन्त्रों की कर द्विज लगाने लगे ।
व्योम में देव दुन्दुभि बजाने लगे ॥
आय शंकर भी स्तुति सुनाने लगे ।
की विनय और ली राह कैलाश की, रामजी ४

छेदीलाल अवध इन्द्रपुर से न कम।
मास छै बीत आये बुलायो लखन ॥
आप मंगवाय सुन्दर आभूषण बसन।
नाथ अपने पिन्हाय औ तारीफ की, रामजी४
आज सब हो बिदा जाय अपने सदन।
बोल उट्ठे सभी जयति रघुबंश मन ॥
बैठे अंगद न बोलैं था भयभीत मन।
अन्तमें गहि चरण बोले युवराज जी, रामजी४
नाथ सौंप्यो तुम्हें बेर मरती पिता।
अब कहाँ जाऊं गुरु मातु पितु तुम सखा॥
जानि बालक शरण राखि कीजै कृपा।
नीचे गृह में टहल सब करूं आपकी, रामजी४
नेत्र में जल भरे सुन के अंगद बचन।
माल मणि युक्त कर से पिन्हाये बसन॥
ले चले साथ अपने भरत औ लखन।
जातबेरी तो झुकझुक के परनाम की, रामजी४
बोलि गुह पुनि दिये नाथ भूषण बसन।
है खुशी राज्य भर अपने अपने सदन॥

ईर्षा वैर तृष्णा मिटा लोभ मन।
क्या कहै शारदा राम के राज की, रामजी ४
दान व्रत नेम का गर्म बाजार था।
भाइयों पर प्रभू का अटल प्यार था॥
पाप था ही नहीं धर्म भरमार था।
वन में लवकुश भये थे गये बाद ही, रामजी४
पुत्र दो दो सभी भाइयों के भये।
नित्य सूदन भरत संग हनू बन गये॥
गावैं एकान्त में राम के गुण नये।
फेर स्तुति सुनी नाथ सनकादि की, रामजी४
राम से संत महिमा भरत ने सुना।
हर समय आय नारद प्रभू गुण गुना॥
नाथ उपदेश दे नित प्रजा मन सना।
राज गुरु ने कहा नीच उपरोहिती, रामजी४
नाथ ने मुनि की शंका समाधान की।
शम्भु ने पुनि सती से निज ध्यान की॥
राम सम्बन्ध शङ्का गरुड़ की उठी।
काग ने उनकी शंका समाधान की, रामजी४

कागपति ने शुरू में कही निज कथा।
ज्ञान से मोह खगपति का फौरन हटा॥
फिर कहा ज्ञान वैराग्य मेटी व्यथा।
फेर महिमा उठी घोर कलिकाल की, रामजी ४
सत्य युग में तरैं योग विज्ञान से।
यज्ञ त्रेता में कर छूटैं भव त्रान से॥
और द्वापर में पूजा करै ध्यान से।
नाम लेते तरैं कलि में सब पातकी, रामजी ४
फिर कहा निज कथा गुरु से कैसे पढ़ा।
जाप शंकर की करता रहा मैं सदा॥
देख गुरु को न आदर किया न उठा।
कोपि शंकरने इसको विकट श्राप दी, रामजी ४
दौड़ कीन्हों गुरु दण्डवत हो विनय।
मांग द्विजवर त्रिलोचन करा दो अभय।
नाथ माया से प्राणी की ही भूल है।
शिष्य पर करि दया काट दो श्रापजी, रामजी
शम्भु बोले वृथा कैसे होगा वचन।
जा अवध जन्म में विप्र के गह चरण॥

विप्र अपमान सहना मुझे है कठिन।
फिरकहा काग लोमशका सम्वादभी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
काग जैसे भया सब सुनाई व्यथा।
राम का मंत्र कैसे मिला कह कथा॥
दान वरदान भक्ती रहेगी सदा।
ज्ञान औ भक्ति का भेद कह कागजी॥
राम जी राम जी राम जी राम जी॥
आरम का बोध कैसे कहा आपने।
आठ प्रश्नों का उत्तर दिया कागने॥
राग मानस विनाशन सुना सामने।
वन्दि वैकुण्ठ पहुँचे सुखगनाथ जी,रामजी४
है उमा गुप्त राखी थी मैं सब कथा।
प्रेम में हो मगन कहि गया सब व्यथा॥
विप्र द्रोही चहे चन्द्र हो सर्वथा।
ऐसे नर को न कोई है अधिकारही,रामजी४

लवकुश काण्ड

आ गरुड़ ने बहुरि कागपति से कहा।
क्या हुआ केरि आगे सुनाओ कथा॥

कागपति ने कहा ध्यान से सुन सख ।
थी सुखी सब प्रजा राम के राज़ की ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
एक दिन राम पुरुजन गुरू साथ में ।
साथ परिवार काशी अभय नाथ में ॥
पूज ब्राह्मण यती दण्डि सन्यास में ।
भिक्षुकों को न इच्छा रही दान की रामजी १
पूज शंकर प्रभू लौट आये नगर ।
थी सभा वृद्ध ब्राह्मण गयो शीश धर ॥
रो रहा रघु दिलीपादिक थे नृप सगर ।
वृद्धहूं सुत मरा नीति क्या राजकी ॥रामजी४
मौन थे देव बाणी हुई सब सुना ।
शूद्र विन्ध्याचल में तप करैं है गुना ॥
पुत्र ब्राह्मण का इस पाप से है फ़ना ।
साजि रथशीश काटाअचल धामदी॥रामजी४
भक्त था इससे तीरथ वरत सब किया ।
विप्र का सुत अचानक यहां पर जिया ॥
रोज दरबार बैठें सिया के पिया ।
घूम सी आइ डी दें खबर राज की । रामजी४

एक दिन एक ने दी भयानक खबर।
आज धोबी ने पत्नी से कह व्यंग स्वर ॥
राम थोड़े हैं सीता को रक्खे हैं घर।
जानि सीता अवधि भूसुता सों कही, रामजी ४
राखि छाया चली जाव निज धामको।
प्रातः सबने निहारा दुखी राम को ॥
भ्रात तीनों कँरें थे भले शाम को।
रिपुदमन से कहा बन तजो जानकी, रामजी ४
यान टुकड़े हृदय के हुए क्या सुना ॥
विश्वमाता से क्या हो गया है गुना।
नीर लोचन भरे हो क्षमा हो क्षमा ॥
राम बोले कुशल तब मेरे प्राण की, रामजी ४
मन्द हूँ बुद्धि का हाथ जोड़े भरत।
जक्त माता अमंगल को मंगल करत ॥
नारि होती सती मातु छाया परत।
पार कैसे हो पति बिन सती जिन्दगी, रामजी ४
ठीक है हो भरत पर लगा दोप है।
दूत की बात अपयश सुनत रोष है ॥

बात रघुवंशियों की टलैं शोक है।
टेढ़ी नजरोंसे सहमें भरत रामजी, रामजी ४।
नाथ बोले सुनो हो पियारे लखन।
छोड़ प्रत्युत्तर अब मानलो यह बचन ॥
जाव सीता लै रथ गंग तट बन सघन।
छोड़ आओ है आज्ञा बड़े भ्रातकी, रामजी ।४
हो निराशा चले शेष कह है मरन।
बैठ रथ सिय चली साजि भूषण वसन ॥
देख देवर शकल चाहती कुछ कहन।
थी विकल जैसे मणि, विनदसा व्यालकी, रामजी ४
देवसरि से उतरि देख बन मन डरी।
घोर जंगल यहाँ धाम मुनि का नहीं ॥
बाघ नाराह वृक्ष देख व्याकुल गिरीं।
आई मुर्छा सम्हाल्यो लखनलालजी, रामजी ४
देख हालत सिया की विकल भे लखन।
प्राण छूटौ हौ अबना चहैं हम जियन ॥
देख संकट में वाणी हुई यह गगन।
जाव लक्ष्मण न शंका करो मातु की, रामजी ४

ब्रह्म बाणी सुनी तो उठे धीर धर।
करिप्रदिच्छण चले मात पद जोड़ कर ॥
जागि सीता बिकल हो रही शीश भर।
प्राण कैसे रुके हो महा पातकी, राम जी ४ ॥
बालमीक मुनि आगये सुन उधर।
देख सीता से बोले कि पुत्री न डर ॥
हाल सुन ले गये निज कुटी प्रेम कर।
राम मूरख कथा सुन हृदय ज्ञान की, रामजी४
त्याग सीता अवध में गये जब लखन।
पूरा कोहराम था हर तरफ था रुदन।
हा सिया कहि गिरीं मातु तीनों धरन ॥
योग अग्नी से जल राह सुरधामकी, रामजी४
शोकयुत चारो भाई किया श्राद्ध तब।
दान दीन्हों द्विजन औ मृतक कर्म सब ॥
एक दिन राम गुरु ग्रह गये बा अदब।
यज्ञ अश्वमेध करने की मन ठानली, रामजी४
आज फिरपुर अवध का बना ठाट था।
तोर बंदन सुमन हर जगह बाट था ॥

भेज दूतों को सब दिशि फिरा नेवता।
आ गये साथ सबके जनकराज जी, रामजी४
भालु बानर सभी राम दल के बुला।
इन्द्र दिगकाल यमजल पवन अग्नि आ।
सप्त ऋषि व्यास नारद ऋषी अंगिरा।
आज त्रैलोक से पुण्य भूमी भरी, रामजी ४
यह आरम्भ मण्डप सजाया सरस।
राम आये लिये साथ मुनि दस सहस॥
आन अटकी सिया बिन भला यज्ञ कस।
शीघ्र नारद सनकादि रची जानकी, रामजी४
राम सीता को देखा भये सब मगन।
ऋद्धि सिद्धि आ के बैठी नृपति के सदन।
बाज आयो दिया साजि भूषन बसन।
छैसहस साथ भट रिपुदमन साथकी, रामजी४
पूछ कौशिक से पूजा भई बाज की।
पत्रिका में विषय राम के राज की॥
बीर हो सो लड़े करि कठिन साज जी।
फिर बिभीषणसे मयसुत विषय बातकी, रामजी

शत्रुहन तब चले निज अनी साज कर।
वेगि लवणासुर मग में भिड़ा आनकर॥
मार डालो पकड़ बांध लो हो निडर।
होड़ दोनों तरफ लगगई प्रान की, रामजी ४
दैत्य सेना भगी केतु मातंक आ।
जूप केतू सुबाहु से मुरछा पड़ा॥
युद्ध था या प्रलय कैसे जाता कहा।
केतु मातंग जूझे पड़ी खलबली, रामजी ४
पुत्र जूझे दोऊ शूल लेकर चला।
कट परें भट लरें क्रोध से तिलमिला॥
देवता भेष बदलें लड़ें करि सल्हा।
बीर निश्चर प्रबल सेन फिरसे भिड़ी, रामजी ४
रिपुदमन बाण मारैं कठिन शिव सुमिर।
छागये बाण नभ ना पवन की डगर॥
बाहु मारी गदा गिर पड़ा तब असुर।
बीर कैटभ असुर ने कठिन मारकी, रामजी ४
शूल ले जूवकेतू के मार्यो उदर।
गिर पड़े राम हा राम कहि तब कुँवर॥

बाहु लखि बन्धु मूर्छित हने कोपिशर ।
करि विकल रिपु गये सुधि भई भ्रातकी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
शूल खींचो दवा राम के नाम दे ।
उठ पड़े तब कुंवर हंस धनुष बान ले ॥
काटे निश्चर प्रबल वेगि हुंकार दे ।
भेज लवणा को कैटभ ने फिर तालदी ॥
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥
जागि लवणा ने भ्राता को भेजा लरन ।
युद्ध करि लौट आया परा गहि च न ॥
शत्रुहन सुत के मारे है सबका मरन ।
क्रोधमय ह्वै चला आ विकट मारकी ॥रामजी॥
जूपकेतू सुबाहू धनुष तान के ।
काटि डारे सहसून सुभट बान से ॥
पुष्प सी शूल बारैं लई सामने ।
शत्रुहन पुत्रबल देखि [illegible] ॥राम॥
शाम होते फिरैं प्रात [illegible] ।
जोड़ की जोड़ मिलकर [illegible] ॥
कोपि लवणा प्रबल शूल लेकर लड़े ।
वज्रसी शूलआ रिपुदमनकेलगी ॥ रामजी॥४

जानि मूर्छित खड्ग ले चला काटने।
बाहु क्रोधित गदा उर हन्यो सामने॥
मूर्छि के गिर पड़ा तब लगे छांटने।
शत्रु सूदन उठे युद्ध की घात की, रामजी ४
राम के बन्दि पद बाण मारयो रिसा
शीश कटि महि परयो नभ सुमन बरसे॥
देखि कैटभ गरजि शैल मारयो उठा।
शत्रुहन बीच ही ली खबर हाथ की, रामजी ४
हाथ कटते ही दौड़ा पसारे बदन।
बाहु मारा कटा शीश बरसे सुमन॥
हाथ जोड़े सुनासीर आया शरन।
आ नगर दो विभागों में कर बांट दी, रामजी ४
श्री सुबाहु को मथुरा नगर में बसा।
विश्व में जूपकेतू का डंका बजा॥
छेदीलाल चली फौज घोड़ा बढ़ा।
सैन के साथ यमुना नदी पार की, रामजी ४
खेलते बाल दो थे पड़ी जो नजर।
पत्र पढ़ बांध घोड़ा नहीं कुछ फ़िकर॥

लै धनुष बाण बैठे थे रोके डगर।
शत्रुसूदन ने बच्चों को आवाज दी, रामजी ४
छोड़ घोड़ा घरे जावो हो बाळ तुम।
धन्य माता पिता जिनके हो लाल तुम॥
भीख मांगो कहा लवने महिपाल तुम।
वीरता खत्म तुमसे यही जानली, रामजी ४
व्यंग सुन दौड़ भट जोर मे आ भिड़े।
बाण लव एक मारा गिरे कहुँ पड़े॥
देह जर्जर भई हो सकें ना खड़े।
शत्रुहन से कहा बाल हैं कालही, रामजी ४
शत्रुहन फिर कहा बाल स्याबाम है।
छोड़ घोड़ा सदन में करो बास है॥
बोले लव पत्र खोळो धरो पास है।
छोड़ घोड़ा बहादुर बने आपही, रामजी ४
राउ बोले कि अच्छा तो जावो सम्हल।
वंदि मुनि लव चलाये विशिख तब प्रबल॥
सारथी अंजि मूर्छित नृपति भे बिकल।
मार बाणों से सेना सभी काट दी, रामजी ४

भागि के कुछ कही राम जी से कथा।
लक्ष्मण युद्ध में जाय मेटो व्यथा ॥
बांधि बच्चों को लाओ रहे क्यो सता।
फौज ले श्री लखन देखा रणस्थली, रामजी ४
ओट आंखिन के हो कोप बोले लखन।
लव हंसे जाय देखो पड़े शत्रुहन ॥
शेष भे क्रोध खींचा धनुष लगि श्रवण।
खींचते बाण कश के हिली पृथ्वी, रामजी ४
याल कूदैं दोऊ दिशि लड़ैं बान से।
युद्ध में दोऊ योधा भिड़े शान से ॥
दौड़ लक्ष्मण गदा मारदी तान के।
मूर्छित हो गिर गये लवने [illegible]दी, रामजी ४
[illegible] ते [illegible] लिये हारते।
[illegible] ने फिर [illegible] मारते ॥
सैन्य थी सब [illegible] जानते।
बाण मारा गिरे मूर्छि लवराज जी, रामजी ४
जागि कुश दौड़ फिर रण मचाने लगे।
काळ से बांण लक्ष्मण चलाने लगे।

सींक से काट दें शिशु लजाने लगे।
शेष सोचें है पातक सिया त्यागही, रामजी ४
बाण करि क्रोध मोहन चलायो कुँवर।
गिर पड़े शेष सेना इधर कुछ उधर॥
भागि आ कुछ अवध में बताई खबर।
राम बोले कि जावो भरतराज जी, रामजी ४
हाथ जोड़े भरतराज होकर बिकल।
सीय त्यागेका है नाथ करनी का फल॥
राम बोले डरे देख शत्रू प्रबल।
यह देखो मैं जाता हूँ रघुराज जी, रामजी ४
सुनि लजाने भरथ राम समझाय कर।
भालु कपि साथ दल भेज दीन्हो समर॥
काल से बाल ठाढ़े लहू का नहर।
साथ आदर के बोले हनूमान जी, रामजी ४
धन्य हैं मातु पितु बाल जाओ सदन।
बाल बोले न बल तो फिरो क्यों करन॥
जाइये अब सम्हल कर भरत [illegible] लन।
भालु कपियों ने पर्वत का बौछारकी, रामजी ४

मार बाणों के शिशु धूल कर दें शिखर।
धान सी काट सेना पड़ा था कहर।।
मार सब को भये फिर भरथ पै निडर।
ऋच्छ सुग्रीव अंगद पवनलाल जी, राम जी ४
जाव सुग्रीव रण बांध लो दोऊ कुंवर।
चल पड़े देख अंगद को कुश कह निडर।।
आवे कुल के कलंका मजा ले इधर।
मातु छोड़ी मिला रिपु से पितु घातकी, रामजी
कोपि अंगद शिखर मार दीन्हीं प्रबल।
काटि कुश बाण मारा उड़े हो बिकल।।
व्योम पर भूमि पर उड़ रहे बाण बल।
गर्व था मिट गया हूं शरण नाथकी, रामजी४
पाँच मारे विशिख जा गिरे जहं भरत।
देख सब बीर विस्मित प्रभू का करत।
बाण वज्रों से सेना कटत महि परत।
बाण मारा भरथ मुर्छि लवराजजी, रामजी४
क्रुध कुश बाण मारा भरथ महि ढले।
लव उठे दोनों भाई गले से मिले।।

दूत आये अवध तब चले खल दले।
पूछा बच्चों से मां बाप का नाम भी, रामजी४
बाल बोले धनुष लो कहानी से क्या।
युद्ध में कोरी गप्पें लड़ानी हैं क्या॥
हम पिता वंश अबतक न जानी है क्या।
मातु सिय मुनि ने पाला पढ़ा ज्ञानकी, रामजी
राम बोले सुभट आ रहे युद्ध हो।
भालु बानर शिखर ढारहे क्रुद्ध हो॥
हो शिला चूर चलते विशिख शुद्ध हो।
देख लवने विभीषण को ललकारदी, रामजी४
दुष्ट दुश्मन से मिल भाई जुझवा दिया।
मातु सी भ्रात पतनी को घर रख लिया॥
डूब मर सिंधु में क्या निलज्जा जिया।
क्या दिखाता है मुहचल अधमपातकी, रामजी
खीझ आई उठा मार दीन्हों गदा।
बाण मोरा गिर्यो भूमि प्रभु के सखा॥
भालु बानर गिरे रण न कोई बचा।
[illegible] सुग्रीव ने युद्ध [illegible] की, राम जी ४

सात योजन में कपिपति गिरे बाण खा।
भालुपति भी गिरे चोट कुश की बला॥
बांधि हनुमान को अश्व के ढिग रखा।
[illegible] में अवधनाथ जी, रामजी ४
[illegible] को ले जूट भूषण बसन।
[illegible] से मगन॥
[illegible] करन।
[illegible] बेटा [illegible] जी, राम जी ४
[illegible] अग्नि [illegible] सिया साथ में।
छोड़ दो [illegible] पड़े साथ दे॥
आय समुझाय सीता को मुनिनाथ ने।
जाय पहुँचे पड़े थे अवधनाथ जी, राम जी ४
सौंप लव कुश लगायो प्रभु निज हृदय।
दुन्दुभी बज उठी सब उठे बोल जय॥
बीत मुर्छा उठे भ्रात कपि भालु मय।
लक्ष्मण जी चले जहं सिया मातु थी, रामजी ४
शेष पहुँचे सहस फण सिंहासन उठा।
बैठ सीता तुरत फिर जमीं में धसा॥

देख व्याकुल सभा पूरा कोहराम था ।
रामलौटे अवध फिर ठना दानका ॥रामजी४
भेंविदा करितहारा भये नृप जनक ।
आय नारद कहा नाथ चालय परख ॥
आयमुनि भेपमें यमचलियादनकुलतिलक ।
द्वारपर आजडिउठी लखनलालकी ॥रामजी४
बोल यमनाथ हम आप बस दो जन ।
बात होगी जाटल तीसरा न सुने ॥
शेष आवे न कोई जहां हम इन ।
आय दुर्वासा भीतर कहा जानकी ॥रामजी४
कांपि उठे लखन वैन सुनि न कहा ।
जाय भीतर कहा लाय आदर करा ॥
वन्दि धो पद लखण शांत कीन्हा क्षुधा ।
भेजल खमण बुलाये सुगुरुराज जी ॥रामजी४
हाल जाना लखन पीठ सरयू सुभग ।
ध्यान धार भला जा जाय पहुंचे स्वरग ॥
राम व्याकुल भरत फिर पड़े लोक जग ।
रामने राज पुत्रों को दे बांटदी ॥ रामजी४

शील वैनाभ थे जो भरत के तनय।
धाम पुष्कल व तुसकर नगर दीन द्य॥
चित्रकतू व अंगद लखन सुत अभय।
राज्यपश्चिमदिशाका उन्हेंसा पदो॥रामजी४

फिर कुशको सिखय नीति दीन्हों अवध।
पुत्र रखियो दया दृष्टि भ्रातन पर अब॥
और उत्तर दिशा राज्य लव लीन्ह सब।
बांटिकेसब सुतनकोकलहशांतिकी॥रामजी४

जाहु केश शत कल्प की राज हो।
ऋक्षपति कृष्ण अवतार में साथ हो॥
फेर आ तट में सरयू बिदा नाथ हो।
नाथ के पैर पकड़े हनूमानजी॥ रामजी४

जाव जुग२ जिवो भानु शशि जलधरन।
जो भजे ना तुम्हें द्वार दुख हो कठिन॥
पुष्प बरसे व जय धुनि से पूरित गगन।
फिर चढ़े यानली राह सुरधामकी॥ रामजी४

प्रेम से जो कथा निज सुने नाथ की।
काटि यम फंद निश्चर तरैं पातकी॥
छेदीलाल कहो जय सियानाथ की।

काट दो दुक्ख भक्तों का रघुनाथ जी ।
राम जी राम जी राम जी राम जी ॥

इति श्री सरल रामायण समाप्त ।



लेखक:—

छेदीलालपाण्डेय (भंडाफोड़)

प्र०-मोतीलालपाण्डेय पो० नौगाँव जि० फतेहपुर ।



❀ श्रीकृष्णायण प्रारम्भ ❀

आज आलम में शोहरत तेरे नाम की ॥
कृष्ण जी कृष्ण,जी कृष्ण,जी कृष्ण जी ॥
पूतना बक अघासुर व चाणूर थे ।
कंस आदि बधे दुष्ट जो क्रूर थे ॥
दीन रक्षा के कारण ही मशहूर थे ।
क्रांतिकारी जमाने में थे एक ही ॥
कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी ॥
चीर खैंचे दुशाशन बड़ी शान से ।
बैठ महफिल सुयोधन के फरमान से ॥

काँप अबला उठी घोर अपमान से।
दौड़ पहुंचे जहाँ रो रही द्रौपदी ॥
कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी ॥

ज्ञान गीता का जादू जिसे चढ़ गया।
छोड़ घर[illegible]ार तेरे गले मढ़ गया।
त्या[illegible] [illegible]त [illegible] सयम सुदृढ़ [illegible] गया।
[illegible]ाती हरस [illegible]हाँ [illegible]े सदा [illegible] [illegible]
कृष्ण जी कृष्ण जी [illegible] जी [illegible]

राजनीती तुम्हारी [illegible]
जीत पांडव की कौरव से [illegible]
कैसे अर्जुन बचा खाइ जयद्रथ ने जा।
पैज अपनी हटा भीष्म की राख ली ॥
कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी ॥

देख हालत सुदामा की तुम रो पड़े।
साग भाया विदुर घर सुरस छोड़ के ॥
बभ्रुवाहन के रण में गये दौड़ के।
बात अर्जुन सुदामा की कैसे मढ़ी ॥
कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी ॥

गाय ब्राह्मण की रक्षा करी आपने।
कूबरी पीर कैसे हरी आपने ॥
इन्द्र ब्रह्मा की तबियत भरी आपने।
टेर गज की सुनी कैसे पहुँचे हरी ॥
कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी ॥
भार भारत का तुमने हटाया स.र।
छेदीलाल है भारत पर अब आपदा ॥
दौड़ो दौड़ो सुदर्शन गरुड़ले गदा।
सूख जाने पर खेती न होगी हरी ॥
कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी कृष्ण जी ॥
सरल महाभा त का इन्तजार कीजिये।



महेश प्रेस, नौघड़ा–कानपुर।